त्रिज्या में बाहरी ओर से नरम मिट्टी खोद कर 4 से 5 कंदों को छोड़कर शेष कंदों की खुदाई कर ली जाती है। इस तरह से खुदाई करने से जड़ों को नुकसान नहीं पहुँचता। खोदी गई कंदिल जड़ों को अच्छी प्रकार साफ पानी से धोकर व छिलका उतार कर हल्की धूप में सुखाया जाना चाहिए।

सुखाना – सुखाने के लिए कंद की ऊपरी छाल उतारना आवश्यक है। ऊपरी छाल उतारने के लिए कुछ देर धूप में सुखाने के बाद परम्परागत रूप से तेज चाकू, पैने हथियार अथवा पत्थर का प्रयोग किया जाता है। एक अन्य विधि में गरम पानी में कंद को दो मिनट तक डूबोकर पुनः ठंडे पानी में डुबोकर तथा इस प्रक्रिया की पुनरावृत्ति तब तक की जाती है, जब तक कि कंद का ऊपरी आवरण ढीला न पड़ जाए। एक अन्य विधि में कंदों को किसी भी पात्र/कोटरी में इकट्ठा कर भूसा, पत्तों या मिट्टी से ढक कर हल्के गरम स्थल पर रखकर (आम की तरह) पाल लगायी जाती है। 7 से 8 दिन उपरांत बाहरी आवरण ढीला पड़ने पर छीलकर आसानी से खींच ली जाती है। परन्तु इस प्रक्रिया से जड़ों की गुणवत्ता प्रभावित होती है। अतः जहाँ तक संभव हो प्रथम विधि द्वारा ही जड़ों की छिलाई/छिलका उतरवाई करना चाहिए।

प्रायः कंद के मध्य भाग का धागा निकाल कर एक समान 4 से 6 इंच छोटे टुकड़ों में यदि सुखाया जाए तो यह प्रक्रिया आसानी से 10 से 15 दिन में पूर्ण हो जाती है। इस तरह धागा निकलने के बाद सूखने की प्रक्रिया में काफी गति आती है। इसकी कंदिल जड़ों में लगभग 85 से 90 प्रतिशत पानी रहता है। सूखी हुई जड़ों में सतावरिन व अन्य ग्लूकोसाइड रसायन प्रमुख रूप से पाये जाते हैं। तत्पश्चात सीधी, साफ, मोटी एक समान जड़ों को ग्रेडिंग कर नमी रहित परिस्थितियों में भण्डारित किया जाता है। बिना छिलका उतारे लम्बे समय तक भण्डारित किये जाने से सतावर की कंद की बाहरी परत अन्दर के गूदे को हानि पहुँचाती है इसलिए कदापि बिना छिलका उतारे सतावर का भण्डारण नहीं किया जाना चाहिए।

बीजों की प्राप्ति – फरवरी – मार्च माह में पूर्ण पके काले रंग के बीजों को एकत्र कर तथा उनके ऊपर का छिलका पानी से धो कर निकालने के पश्चात् संग्रहण करना चाहिए। भण्डारण के पूर्व यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि बीज पूर्णतः सूख गये हों।

उपज प्राप्ति – सतावर की खेती से प्रति हेक्टेयर 40 से 50 क्विंटल सूखी जड़ें प्राप्त की जा सकती है। बाजार में इन जड़ों का वर्तमान मूल्य लगभग रू. 25/– से 50/– प्रति किलो है। इस प्रकार एक हेक्टेयर की खेती से कृषक लगभग रूपये 65,000/– की आय प्राप्त कर सकते हैं।

जड़ों का विनाश विहीन विदोहन – वन क्षेत्रों से सतावर की जड़ों का विनाश विहीन विदोहन करते समय हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए –

(1) सतावर की कंदिल जड़ों को दिसम्बर–जनवरी माह में जमीन से खोदकर निकालना चाहिए। सतावर की जड़ों की खुदाई पौधे से एक से डेढ़ फीट की दूरी से खोद कर करनी चाहिए। जड़ों को हाथ/खुरपी या हंसिया से काट कर विदोहित करना चाहिए। खुदाई करते समय कुछ कंदिल जड़ें (4 से 6) जमीन के अन्दर छोड़ देनी चाहिए तथा उसके ऊपर से मिट्टी ढक देनी चाहिए जिससे कि अनुकूल परिस्थितियाँ मिलने पर पुनर्उत्पादन हो सके।

(2) सतावर के पके हुए फल जो काले रंग के होते हैं, को एकत्र कर लेना चाहिए। इन फलों को मसलकर इनका चिपचिपा काला छिलका अलग कर बीज पानी से अच्छी प्रकार धोकर व सुखाकर अगली फसल के लिए भण्डारित करना चाहिए। इन बीजों का उपयोग अगले वर्ष वन क्षेत्रों में रोपण हेतु किया जा सकता है।

संकलन एवं संपादन :

डॉ. ए. के. पाण्डे

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

निदेशक

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ. – आर.एफ.आर.सी,

मण्डला रोड, जबलपुर – 482021

फोन : 0761-2840483, 4044002

वन विस्तार प्रभाग

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ. – आर.एफ.आर.सी,

मण्डला रोड, जबलपुर – 482021

फोन : 0761-2840627

Amrit Offset # 2413943

सतावर

(Asparagus recemosus)

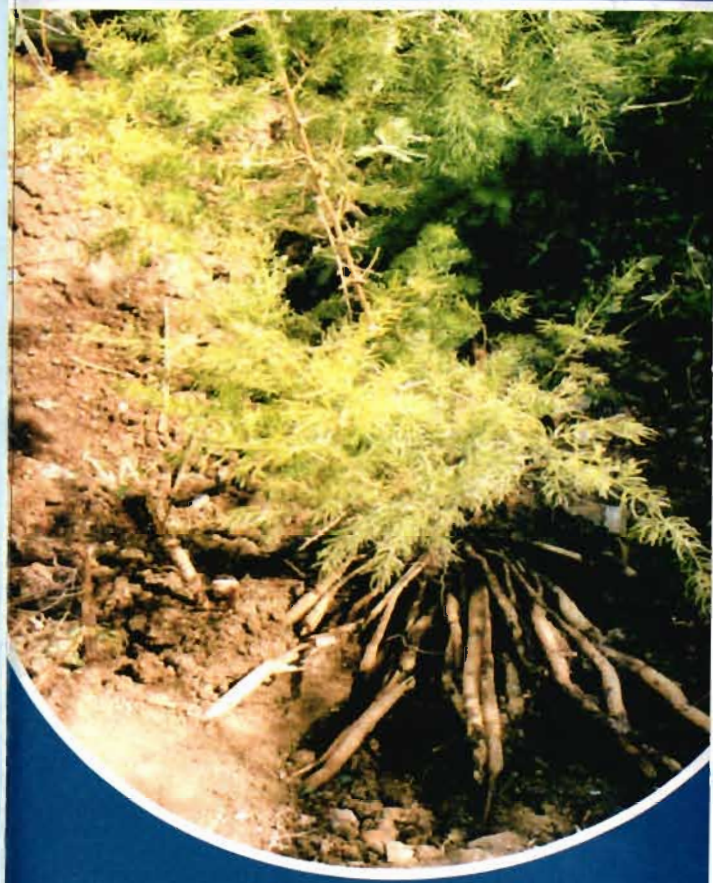

TROPICAL FOREST RESEARCH INSTITUTE

(Indian Council of Forestry Research and Education)

P.O.-R.F.R.C., Mandla Road

JABALPUR (M.P.) 482021

परिचय –

सतावर लिलियेसी कुल का आरोही बहुवर्षीय पौधा है जिसका उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में सतावरी के नाम से मिलता है। इसका वैज्ञानिक नाम *एस्पेरेगस रेसीमोसस* है। यह मध्यप्रदेश के साल, सागौन एवं मिश्रित वनों में पाया जाता है। इसे बाग-बगीचे में सजावटी पौधों के रूप में भी उगाया जाता है। भारत में यह समुद्र तल से 400 से 1200 मीटर ऊँचाई तक पाया जाता है। इसकी लता लगभग 1 मीटर से 5 मीटर तक लम्बी होती है। यह एक बहुवर्षीय, कांटेदार आरोही पौधा है जिसे बढ़ने के लिये सहारे की आवश्यकता होती है। शाखायें पतली, पत्तियाँ सुई के समान बारीक, हरे रंग की लम्बी 1.3 से 1.5 से.मी. होती है। शाखाओं पर लम्बे तथा टेढ़े कांटे होते हैं। इसके फूल सफेद रंग के होते हैं जो गुच्छों में लगते हैं। फल छोटे-छोटे गोल एवं हरे जो पकने पर लाल रंग के हो जाते हैं जिसमें काले रंग के कठोर बीज होते हैं। फलों के ऊपर एक चिपचिपा पदार्थ लगा होता है जो स्वाद में मीठा होता है। पक्षी इस मीठे पदार्थ के कारण इन्हें खाते हैं तथा इस प्रकार बीजों के छितराव में मदद करते हैं। इसी कारण सतावर के पौधे वनों में कई ऐसे स्थानों पर दिखाई देते हैं जहाँ पर इसके पौधे भी नहीं होते। इनकी जड़ें कंदवत् लम्बी तथा गुच्छों में होती है। जड़ों की संख्या पौधे की आयु पर निर्भर करती है। 4-5 वर्ष के पुराने पौधे में प्रायः 100 से अधिक कंदिल जड़ें पायी जाती है।

उपयोग –

सतावर की कंदिल जड़ें मधुर, रसयुक्त तथा कई रसायनयुक्त होती हैं जिनका उपयोग आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण में होता है। जड़ों से प्राप्त सतावरिन व सैपाजेनिन रसायन शीतवीर्य, मेघाकारक, जठराग्निवर्धक, पुष्टिदायक, स्निग्ध, नेत्रों के लिये हितकर, शुक्रवर्धक, वात, पित्त रक्त तथा शोथ दूर करने वाले होते हैं। इससे मधुमेह एवं बलवर्धक टॉनिक, ल्यूकोरिया, खून की कमी, भूख न लगने, पाचन सुधारने, मानसिक तनाव से मुक्ति एवं दुग्ध बढ़ाने वाली औषधियाँ बनाई जाती है। इसका उपयोग शक्तिवर्धक दवाइयाँ बनाने में, कमजोरी दूर करने में, साथ-साथ शुक्रवर्धक तथा यौनशक्ति बढ़ाने में, यूनानी पद्धति से बनायी जाने वाली माजून जंजीबेल, माजून शीर बरगदवली तथा माजून पाक आदि दवाइयों में किया जाता है। इसका उपयोग न केवल पुरूषों के लिए बल्कि महिलाओं के विभिन्न रोगों जैसे - योनि दोष, बाँझपन, ल्यूकोरिया के निवारण हेतु औषधियाँ बनाने में किया जाता है। प्रसव उपरान्त माताओं के दूध बढ़ाने में भी सतावर काफी प्रभावी सिद्ध हुआ है। वर्तमान में इससे संबंधित कई दवाईयाँ बनाई जा रही है। न केवल महिलाओं बल्कि पशुओं के दूध बढ़ाने में सतावर अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है। सतावर का उपयोग गठिया, पेट दर्द, पेशाब एवं मूत्र संस्थान से संबंधित रोगों, गर्दन अकड़ जाना, पक्षाघात, पैरों के तलवे में जलन, साइटिका, हाथों तथा घुटने आदि के दर्द तथा सिर दर्द आदि के निवारण हेतु बनाई जाने वाली विभिन्न औषधियों में भी किया जाता है।

कृषि तकनीक -

जलवायु – सतावर की खेती के लिए उष्ण, आर्द्र जलवायु उपयुक्त होती है। 250 से.मी. वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र इसकी खेती के लिए उपयुक्त होते हैं। ऐसे क्षेत्र जिनका न्यूनतम तापमान 10 से 15 डिग्री से.ग्रे. तथा अधिकतम तापमान 35 से 42 डिग्री से.ग्रे. होता है, इसकी खेती के लिए उपयुक्त होते हैं।

भूमि – इसकी खेती के लिए बलुई, दोमट मिट्टी सबसे अधिक उपयोगी होती है। इसकी अच्छी खेती के लिए भूमि में अच्छी जल निकासी का प्रबंध होना चाहिए। जहाँ तक संभव हो इसकी खेती काली मिट्टी वाली भूमि में नहीं करनी चाहिए, क्योंकि ऐसी मिट्टी में जड़े अच्छी तरह से नहीं बढ़ती हैं।

भूमि की तैयारी – सतावर की खेती के लिए अप्रैल-मई माह में कम से कम दो बार खेत की जुताई अच्छी तरह से कर देनी चाहिए। घास-फूस व खरपतवार आदि निकालकर खेत को समतल कर देना चाहिए। बुआई से लगभग 15 दिन पहले 10 से 15 टन गोबर की पकी हुई खाद प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में मिला देना चाहिए।

बुआई – इसकी खेती हेतु रोपणी में पौध तैयार की जाती है। जिसके लिए 1 X 10 मीटर की उठी हुई क्यारी (Raised bed) बनाकर उसमें 1:1:1 के अनुपात में रेत, खाद, मिट्टी का मिश्रण भर देना चाहिए। तत्पश्चात् अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में बीजों को 2-3 से.मी. की गहराई में बो देना चाहिए (1 हेक्टेयर भूमि में खेती हेतु पौध तैयार करने के लिए लगभग 2 से 3 किलो बीजों की आवश्यकता होती है)। सतावर की पौध सीधे पॉलीथीन बैग में बीजों की बुआई कर भी तैयार की जा सकती है। बुआई करने के पूर्व बीजों को गोबर की स्लरी बनाकर 24 घंटे भिगोंकर उपचारित करने से अंकुरण शत प्रतिशत आता है। बीज बोने के डेढ़ से दो माह पश्चात् जिस समय पौधों की लंबाई लगभग 15-25 से.मी. हो जाये उन्हें रोपाई हेतु उपयोग में लाना चाहिए।

रोपाई – 15 से 25 से.मी. ऊँचाई के पौधे रोपाई हेतु सर्वथा उपयुक्त होते हैं। कतार से कतार एवं पौधों से पौधों के बीच की दूरी 50 X 50 से.मी. होनी चाहिए। पौधों का रोपण करते समय प्रति पौधा 200 ग्राम की दर से वर्मीकम्पोस्ट का उपयोग लाभकारी होता है।

सिंचाई – सतावर की फसल के लिए अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। प्रारंभ में 15 दिन में एक बार तथा पौधा बड़ा होने पर माह में एक बार हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है। पौधों के एक बार स्थापित हो जाने पर अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है।

सहारा हेतु – अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए खेत में लताओं के सहारे के लिए लोहे का एंगल/पोल, बांस या वृक्षों की टहनियों को प्रत्येक पौधे के पास गाड़ देना चाहिए जिससे कि पौधों की लताओं को ऊपर बढ़ने हेतु सहारा प्राप्त हो सके।

जड़ों की खुदाई – लगभग डढ़ साल पश्चात् जब पौधों की पत्तियाँ पीली पड़ने लगे, जड़ों की खुदाई कर लेनी चाहिए। इसके लिए एक दिन पूर्व खेत में हल्का पानी देकर जमीन को नरम बना लिया जाता है जिससे हल चलाकर जड़ों की खुदाई आसानी से की जा सकती है। अगली फसल की बिजाई के लिए उपयुक्त मात्रा में इसी समय डिस्क अलग से रख लेनी चाहिए। खुदाई की अन्य विधि में पौधे के इर्द-गिर्द एक फुट